"पराई ताति"

• जिस अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ।
ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित उजाड़ी पूकारे खला ।

अर्थः- जिसके हृदय में पराई ईरखा हो, उसका अपना भी कभी भला नहीं होता, उसके वचन पर कोई एतबार नहीं करता वह सदा जैसे उजाड़ में खड़ा चिल्लाता है ।

जिस अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभ गइआ । नित चुगली करे अणहोदी पराई मुह कढि न सकै ओस दा काला भइआ ।

अर्थः- जिस मनुष्य के हृदय में चुगली होती है वह चुग़ल के नाम से ही मशहूर हो जाता है, उसकी पिछली सारी की हुई कमाई व्यर्थ जाती है, वह सदा पराई झूठी चुग़ली करता है, इस मुकालख़ करके वह किसी के माथे भी नहीं लग सकता उसका मुँह काला हो जाता है और दिखा नहीं सकता ।

करम धरती सरीर कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए । गला उपरि तपावस न होई विस खाधी ततकाल मरि जाए ।

अर्थः- इस मानव जनम में शरीर कर्म रूपी बीज बीजने के लिए जमीन है, इस में जिस तरह का बीज मनुष्य बीजता है, उसी तरह का फल खाता है किए कर्मों का निबेड़ा बातों से नहीं होता अगर विष खाया जाए तो अमृत की बातें करने से मनुष्य बच नहीं सकता तुरंत मर जाता है ।

भाई वेखह निआउ सच करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए । जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ।

अर्थः- हे भाई ! सच्चे प्रभु का न्याय देखो, जिस तरह के कोई काम करता है, वैसा उसका फल पा लेता है । हे नानक ! जिस दास को प्रभु ये समझने की सारी बुद्धि बख़्शता है, वह प्रभु के दर की ये बातें कर के सुनाता है ।

• मल जुई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखे नो पाइआ । पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मल लाइ मनमुख आइआ ।

अर्थः- मैल और जूओं से भरा हुआ नीला और काला जुल्ला उस बे - मुख ने बेमुख को डाल दिया, संसार में उसे कोई पास बैठने नहीं देता, गंद पड़ के बल्कि ज्यादा मैल लगा के मनमुख वापस आया ।

पराई जो निंदा चुगली नो वेमुख करि के भेजिआ ओथे भी मुह काला दुहा वेमुखा दा कराइआ । तड़ सुणिआ सभत जगत विचि भाई वेमुख सणे नफरे पउली पउदी फावा होइ के उठि घरि आइआ ।

अर्थः- जो मनमुख पराई निंदा व चुगली करने के लिए सलाह करके भेजा गया था, वहाँ भी दोनों का मुँह काला किया गया । संसार में हर तरफ तुरंत सुना गया है कि हे भा ई! बेमुख को नौकर समेत जूतियां पड़ीं और खासा हल्का हो के घर को आ गया है ।

अगै संगती कुड़मी वेमुख रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजी फिर आणि घर पाइआ । हलत पलत दोवे गए नित भुखा कूके तिहाइआ ।

अर्थः- आगे संगतों व कुड़मों भाव, साक - संबधियों में बेमुख को बैठना ना मिले, तो फिर पत्नी और भतीजों ने ला के घर में ठिकाना दिया, उसके लोक - परलोक दोनों व्यर्थ गए और अब भूखा और प्यासा पुकारता है ।

धन धन सुआमी करता पुरख है जिनि निआउ सच बहि आपि कराइआ । जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ । एह अखर तिनि आखिआ जिनि जगत सभ उपाइआ ।

अर्थः- धन्य विधाता मालिक है जिसने खुद ध्यान से सच्चा न्याय कराया है, कि जो मनुष्य पूरे सतिगुरु की निंदा करता है, सच्चा प्रभु उस को खुद आत्मिक मौत मार के दुखी करता है, ये न्याय के वचन उस प्रभु ने खुद कहे हैं जिस ने सारा संसार पैदा किया है ।

• नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे । भगत मुखे ते बोलदे से वचन होवदे । प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणदे ।

अर्थः- हे नानक ! संत अपने विचार बताते हैं और चारों वेद भाव, पुरातन धर्म पुस्तकें भी यही बात कहते हैं कि भक्तजन जो वचन मुँह से बोलते हैं वह सही होते हैं । भक्त सारे जगत में मशहूर हो जाते हैं, उनकी शोभा सारे लोग सुनते हैं ।

सुख न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे । ओइ लोचनि ओना गुणे नो ओइ अहंकारि सड़ंदे।

अर्थः- जो मूर्ख मनुष्य ऐसे संतों से वैर करते हैं वह सुख नहीं पाते, वह कष्ट देने वाले जलते तो अहंकार में हैं, पर संतजनों के गुणों को तरसते हैं ।

ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे । जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ।

अर्थः- इन दुखदाई मनुष्यों के वश में भी क्या है ? शुरू से बुरे कर्म करने के कारण बुरे संस्कार ही उनका भाग्य है और इन संस्कारों से प्रेरित हो के गलत रास्ते पर पड़े रहते हैं ।

वैर करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे । जो जो संत सरापिआ से फिरहि भवंदे ।

अर्थः- जो मनुष्य ईश्वर की तरफ से मरे हुए हैं, वह किसी के सगे नहीं । निरवैरों के साथ भी वैर करते हैं और परमात्मा व धर्म - न्याय के अनुसार दुखी होते हैं ।

पेडु मंढाहू कटिआ तिस डाल सुकंदे । से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सच सबद नीसाण । सच जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाण । (4-306-308)

अर्थः- जो जो मनुष्य संत गुरु की ओर से धिक्कारे हुए हैं भाव, गुरु के दर से वंचित हैं वह भटकते फिरते हैं । जो वृक्ष जड़ से उखड़ जाए, उसकी टहनियां भी सूख जाती हैं । जो मनुष्य सतिगुरु के सन्मुख रहके हरि की महिमा करते हैं, वही सच्चे भक्त हैं और उनके पास सच्चा शब्द रूप निशान है। मैं सदके हूँ कुर्बान हूँ उन पर से जो सच्चे प्रभु को तन से, मन से स्मरण करते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"